प्रस्ताव

वार्षिक आम सभा बैठक

सुरक्षा • विकास • जागरण • एकता

अप्रैल 15th & 16th, 2017

राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच

Forum for Awareness of National Security

गुरुग्राम

प्रस्ताव क्र.-6

नस्लीय भेदभाव

जाति, वर्ग, पंथ और रंग आदि प्रत्येक समूह के विकास के स्रोत होने के साथ ही अन्य समूहों के साथ संघर्ष और विवाद का भी एक स्रोत रहा है। आम तौर पर ऐसे संघर्षों का कारण अन्य समूहों की कीमत पर एक समूह का विकास होना रहा है, जैसे प्रकृति द्वारा प्रदत्त प्राकृतिक संसाधनों का शोषण, क्षेत्रीय नियंत्रण और वर्चस्व, व्यक्तिगत रंजिश, राष्ट्रीयता व अन्य हितों का संघर्ष, जबरन दूसरों की परिसंपत्तियों पर आधिपत्य आदि।

कभी-कभी विभिन्न जातियों के लिए नफरत झगड़े व हत्या की वजह बन जाती हैं, जो मुख्यत: रंगों पर आधारित होती है। यह देश के भीतर या विभिन्न देशों में हो सकता है। व्यक्तियों या कभी-कभी लोगों का एक समूह रोजगार के बेहतर अवसरों, शिक्षा, प्राकृतिक आपदा आदि के चलते अपने मूल स्थानों यानी देशों से बाहर जाता है।

भारत एक विशाल देश है और यहां बड़ी संख्या में जातीय समूह हैं। यह बहुत दुखद स्थिति है कि भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के लोग, जो उपर्युक्त कारणों से देश के अन्य हिस्सों में चले गए हैं, उन्हें घृणा, छेड़छाड़, अपमान, बलात्कार, भेदभाव, मारपीट का शिकार होना पड़ता है। और कभी-कभी तो उन्हें मार भी दिया जाता है। उत्तर-पूर्व में अन्य लोगों के साथ भी ऐसे वाकये देखने को मिलते हैं। वे भारतीय हैं और गोरे रंग व वैशिष्यटता के आधार पर एक भारतीय द्वारा अन्य भारतीयों के साथ इस तरह का व्यवहार किया जाना, पूरे देश के लिए शर्म की बात है। हाल में अफ्रीका के नागरिकों के साथ भारत में भेदभाव किए जाने का मामला सामने आया। यह एक सामाजिक और आपराधिक, दोनों समस्या है और इसका तदनुसार निराकरण किया जाना चाहिए। हर वर्ण की एक अलग परंपरा है, उनकी खाने की आदतें, पोशाक और अन्य सामाजिक सरोकार अलग हैं।

समय-समय पर, हमने भारतीयों लोगों के साथ अन्य देशों में नस्लीय भेदभाव को भी देखा है, जो वहां शिक्षा, रोजगार आदि के लिए गए हैं। और जिन भारतीय को वहां की नागरिकता मिल गई है, उन्हें भी अपमानित, मारपीट, धक्का-मुक्की, नफरत आदि का शिकार होना पड़ता है और कभी-कभी तो इनकी हत्या भी कर दी जाती है। हालांकि, यह कुछ सच्चाई है कि स्थानीय लोग अपने रोजगार का एक हिस्सा इन लोगों के चलते खो देते हैं, लेकिन अधिकांशत: अपने कौशल के चलते इनमें श्रेष्ठता होती है और मेजबान देश भी अपने खुद के

विकास में इनसे लाभान्वित होता है। चूंकि इन स्थानीय लोगों के पास नौकरियों के लिए जरूरी विशेष कौशल नहीं होते हैं।

हाल में अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन आदि देशों में ऐसी घटनाओं में तेजी आई है। हालांकि भारत ऐसे हर मामलों को उन देशों के साथ उठा रहा है और उस पर पैनी निगाहें भी रख रहा है, लेकिन इन मामलों में और अधिक सख्त व निवारक कार्रवाई की जरूरत है।

फोरम फॉर अवेयरनेस ऑफ नेशनल सिक्योरिटी (फैन्स) ऐसे नस्लीय भेदभाव की कड़ाई से निंदा करता है और निम्न संकल्प प्रस्तावित करता है;

1. इस तरह के अपराधियों को कठोर और त्वरित सजा दी जानी चाहिए।
2. दूसरे देशों के नागरिकों व साथी नागरिकों के साथ सम्मान, सहयोग और मदद संबंधी जागरूकता कार्यक्रम जनता को शिक्षित करने के लिए चलाया जाना चाहिए।
3. हमें दूसरे देशों के साथ मजबूती से कार्रवाई करने की जरूरत है, जहां ऐसी घटनाएं कूटनीतिक चैनलों के जरिये होती हैं।